ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 2, Issue 11, November 2013

ऋग्वेदानुसर आत्मतत्व का दिग्दर्शन

वर्षा जोशी

रिसर्च स्कॉलर, महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय , अजमेर

सारांश

सनातन धर्म का सबसे आरम्भिक स्रोत है। इसमें 10 मण्डल,1028 सूक्त और वर्तमान में 10,462मन्त्र हैं, मन्त्र संख्या के विषय में विद्वानों में कुछ मतभेद है। मन्त्रों में देवताओं की स्तुति की गयी है। इसमें देवताओं का यज्ञ में आह्वान करने के लिये मन्त्र हैं। यही सर्वप्रथम वेद है। ऋग्वेद को इतिहासकार हिन्द-यूरोपीय भाषा-परिवार की अभी तक उपलब्ध पहली रचनाओं में एक मानते हैं। यह संसार के उन सर्वप्रथम ग्रन्थों में से एक है जिसकी किसी रूप में मान्यता आज तक समाज में बनी हुई है। यह सनातन धर्म का प्रमुख ग्रन्थ है।ऋग्वेद सबसे पुराना ज्ञात वैदिक संस्कृत पुस्तक है। इसकी प्रारम्भिक परतें किसी भी इंडो-यूरोपीय भाषा में सबसे पुराने मौजूदा ग्रन्थों में से एक हैं।ऋग्वेद की ध्वनियों और ग्रन्थों को दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व से मौखिक रूप से प्रसारित किया गया है।दार्शनिक और भाषाई साक्ष्य इंगित करते हैं कि ऋग्वेद संहिता के थोक की रचना भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में हुई थी, जो कि सबसे अधिक संभावना है- 1500 और 1000 ईसा पूर्व, 1700-1000 BCE भी दिया गया है।

ऋक् संहिता में 10 मण्डल तथा बालखिल्य सहित 1028 सूक्त हैं। वेद मन्त्रों के समूह को सूक्त कहा जाता है, जिसमें एकदैवत्व तथा एकार्थ का ही प्रतिपादन रहता है। ऋग्वेद में ही मृत्युनिवारक त्र्यम्बक-मंत्र या मृत्युंजय मन्त्र (7/59/12) वर्णित है, ऋग्विधान के अनुसार इस मन्त्र के जप के साथ विधिवत व्रत तथा हवन करने से दीर्घ आयु प्राप्त होती है तथा मृत्यु दूर हो कर सब प्रकार का सुख प्राप्त होता है। विश्व-विख्यात गायत्री मन्त्र (ऋ० 3/62/10) भी इसी में वर्णित है। ऋग्वेद में अनेक प्रकार के लोकोपयोगी-सूक्त, तत्त्वज्ञान-सूक्त, संस्कार-सुक्त उदाहरणतः रोग निवारक-सूक्त (ऋ° 10/137/1-7), श्री सूक्त या लक्ष्मी सूक्त (ऋग्वेद के परिशिष्ट सूक्त के खिलसूक्त में), तत्त्वज्ञान के नासदीय-सूक्त (ऋ° 10/129/1-7) तथा हिरण्यगर्भ सूक्त (ऋ° 1/121/1-10) और विवाह आदि के सूक्त (ऋ° 10/85/1-47) वर्णित हैं, जिनमें ज्ञान विज्ञान का चरमोत्कर्ष दिखलाई देता है।इस ग्रन्थ को इतिहास की दृष्टि से भी एक महत्वपूर्ण रचना माना गया है। ईरानी अवेस्ता की गाथाओं का ऋग्वेद के श्लोकों के जैसे स्वरों में होना, जिसमें कुछ विविध भारतीय देवताओं जैसे अग्नि, वायु, जल, सोम आदि का वर्णन है।[1,2]

परिचय

'प्रज्ञानं ब्रह्म ' अर्थात ज्ञान ही ब्रह्म है - ऋग्वेद , ऐतरेय उपनिषद ३ /१/३

'तत्वमसि ' - अर्थात वह ब्रह्म तू ही है - सामवेद, छान्दोग्य उपनिषद ६ /८ / ७

'ऐयात्मा ब्रह्म ' - अर्थात यह आत्मा ही ब्रह्म है, अथर्ववेद , मांडूक्य उपनिषद मन्त्र २

'अहम् ब्रह्मसिम ' - अर्थात मैं ब्रह्म हूँ - यजुर्वेद बृहदारण्यक उपनिषद १ / ४ ०

आत्मा को ही ब्रह्म कहा गया है तथा यह भी कि प्रतेयक प्राणी के शारीर में व्याप्त आत्मा अजर , अमर , नित्य , अनादि अविनाशी तथा प्रकाश स्वरुप है । शारीर के मृत हो जाने पर भी यह आत्मा नहीं मरती । आत्मा का अस्तित्व बना रहता है ।[1,2]

आत्मा (The soul) का विचार सम्भवतः सबसे पहले आर्य ऋषियों के मन में ही आया । उन्होने अनुभव किया कि जो कुछ भी हमारी दृष्टि में आता है , हम देखते हैं , छूते हैं सब परिवर्तन शील है नष्ट हो जाने वाला है । यह आज है कल नहीं रहेगा ।

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 2, Issue 11, November 2013

उन्होंने इन सभी पदार्थों को जड़ (Inert) कहा I उन्होंने यह भी अनुभव किया कि न तो हम अपनी ईच्छा के अनुसार जन्म ले सकते हैं , न मृत्यु को प्राप्त हो सकते हैं I ऐसा क्यों होता है ? कौन सी ऐसी शक्ति है जो हमारे शारीर के अंगों को संचालित (Activate) करती है I सम्भवतः कोई अदृश्य शक्ति शारीर में विद्यमान है , जो शरीर को गतिशील तथा चैतन्य बनाये रखती है I तथा जब वह निकल जाती है तब यद्यपि भौतिक शरीर तो रहता है , परन्तु उसके सभी अंग , सभी इन्द्रियां काम करना बंद कर देती हैं तथा शरीर को मृत कहा जाता है I महर्षि कपिल ने उस अदृश्य शक्ति को 'आत्मा ' का नाम दिया तथा आत्मा को एक मूलभूत तत्व कहा को चैतन्य तथा क्रियाशील (Conscious) है I समस्त ब्रह्माण्ड कि रचना इन्हीं जड़ तथा चेतन तत्वों के संयोग से हुई है I[3,4]

दक्षिण भारत के प्रसिद्ध संत महर्षि रमण कहते हैं कि यह समस्त संसार ही हमारी निराकार, अपरिवर्तनशील आत्मा का विस्तार है I "अध्यात्मिक ग्रंथों में आत्मा को एक अत्यंत सूक्ष्म , चैतन्य ,आकाश कि भांति व्यापक तत्व कहा गया है जिसके १ ७ अंग कहे गए हैं I पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ जिनसे हम ज्ञान प्राप्त करते हैं जैसे आँख , नाक , कान ,जिव्हा तथा त्वचा , पञ्च कर्मेन्द्रियाँ जैसे हाथ, पैर , वाणी ,लिंग और गुदा I पञ्च प्राण जैसे अपान ,व्यान ,समान , उदान तथा प्राण I मन और बुद्धि I ऐसा कहा गया है कि आत्मा मनुष्य कि जागृत अवस्था में इस स्थूल शारीर में रहते हुए उपर्युक्त अंगों के द्वारा बाहरी जगत से संपर्क साधती है I आत्मा को चैतन्य तथा अजर और अमर कहा गया है और शरीर को जड़ किन्तु शरीर के बिना आत्मा पंगु है I[4]

श्रीमद्भागवत गीता में भगवन श्री कृष्ण कहते हैं " समोहम सर्व भूतेषु ...." अ ९/२ ९ मैं सभी जीवधारियों में समान रूप से व्याप्त हूँ I

ब्रह्मसूत्र (वेदांत दर्शन) अ २ पाद ३ के १ ६ वें सूत्र में कहा गया है कि यह जीवात्मा वास्तव में परमेश्वर का अंश , जीवन मरण से रहित , विज्ञानं स्वरुप , नित्य अविनाशी है , इसमें कोई शंका नहीं है I तो भी यह अनादि परम्परागत अपने कर्मों के अनुसार प्राप्त हुए स्थावर अर्थात वृक्ष , पहाड़ आदि तथा जंगम अर्थात देव , मनुष्य तथा पशु - पक्षी आदि शरीरों के आश्रित हैं I

यदि यह चेतन तत्व आत्मा - देव ,मनुष्य , पशु -पक्षी , पहाड़ आदि समस्त में व्याप्त है तो फिर समस्त संसार चेतनामय हुआ I फिर जड़ पदार्थ क्या हैं ? वास्तव में भूल वहीँ होती है जब चैतन्य आत्मा को जड़ से अलग सिद्ध करने की कोशिश होती है I विज्ञानं की दृष्टि से सभी पदार्थ ऊर्जा का रूप हैं अतः यह समस्त संसार ही चेतनामय है , जड़ कुछ भी नहीं I [5,6]

IJIRSET

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 2, Issue 11, November 2013

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्॥1॥

शब्द विन्यास

अग्निम्। ईळे। पुरःहितम्। यज्ञस्य। देवम्। ऋत्विजम्।
होतारम्। रत्नऽधातमम्॥1॥

आदि शंकराचार्य ने भी कहा है - न यहाँ कुछ है, न वहाँ कुछ है । जहाँ जहाँ जाता हूँ न वहाँ कुछ है । विचार करके देखता हूँ तो न जगत ही कुछ है। अपनी आत्मा (चैतन्यता) के ज्ञान के परे कुछ भी नहीं है ।

आत्मा का स्वरुप तथा गुण-यदि हम आत्मा के परमाणु से भी सूक्ष्म स्वरुप को समझ सकें तो विज्ञानं के नियमों के अंतर्गत उसके अदृश्य , चैतन्य ,अविनाशी ,प्रकाश स्वरुप का होना जिसमें असीमित ऊर्जा समाहित होती है, भी सरलता से समझ सकते हैं ।[3]

कठोपनिषद के प्रथम अध्याय कि द्वितीय वल्ली में आत्मा के स्वरुप को बतलाते हुए कहा गया है कि प्रक्रित पर्यन्त जो भी सुक्ष्मतिसूक्ष्म तत्व है , यह आत्म तत्व उससे भी सूक्ष्म है । यह इतना सूक्ष्म है कि जब तक इसको समझाने वाला कोई महापुरुष न हो , तब तक मनुष्य का इसे समझ पाना कठिन है ।

आत्मा कि सूक्ष्मता के संभंध में शेवताश्वरुपनिषद के अध्याय पांच में कहा गया है कि -

"बालाग्रस्तभागस्य शतभा कल्पितस्य च ।[7,8]

भागो जीवः स विज्ञहएः स चनंत्याय कल्पते । । (५ -९)

अर्थात एक बाल की नोक के हम सौ टुकड़े कर लें , फिर उनमें से एक टुकड़े के पुनः सौ टुकड़े कर लें । उनमें से एक टुकड़ा जितना सूक्ष्म हो सकता है , उसके सामान आत्मा का स्वरुप समझना चाहिए । यह कहना भी केवल उसकी सूक्ष्मता का बोध कराने के लिए ही है । वास्तव में चेतन और सूक्ष्म वस्तु के स्वरुप को जड़ और स्थूल कि उपमा से नहीं समझाया सकता क्योंकि बाल कि नोक के १ ० हज़ार भागों में से एक भाग भी आकाश में जितने आकाश को रोकता है , अर्थात उससे भी सूक्ष्म है यह आत्मा ।[2]

विचार – विमर्श

भारत में दर्शन की समृद्ध परंपरा रही है। भारतीय प्राचीनतम दर्शन वैदिक दर्शन है, जिसका आधार चार वेद हैं - ऋग्वेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद, सामवेद। वैदिक दर्शन के पश्चात के दर्शन को वेदोत्तर दर्शन कहा जा सकता है। वेदोत्तर दर्शन को आस्तिक और नास्तिक दर्शन में विभाजित किया जा सकता है। उल्लेखनीय है कि आस्तिक दर्शन वे हैं जो वेदों को सत्य मानते हैं जबकि नास्तिक दर्शन वेदों में विश्वास नहीं करते। बताते चलें कि यहाँ आस्तिक या नास्तिक शब्द का ईश्वर की अवधारणा से कोई स्पष्ट सम्बन्ध नहीं है।

IJIRSET

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 2, Issue 11, November 2013

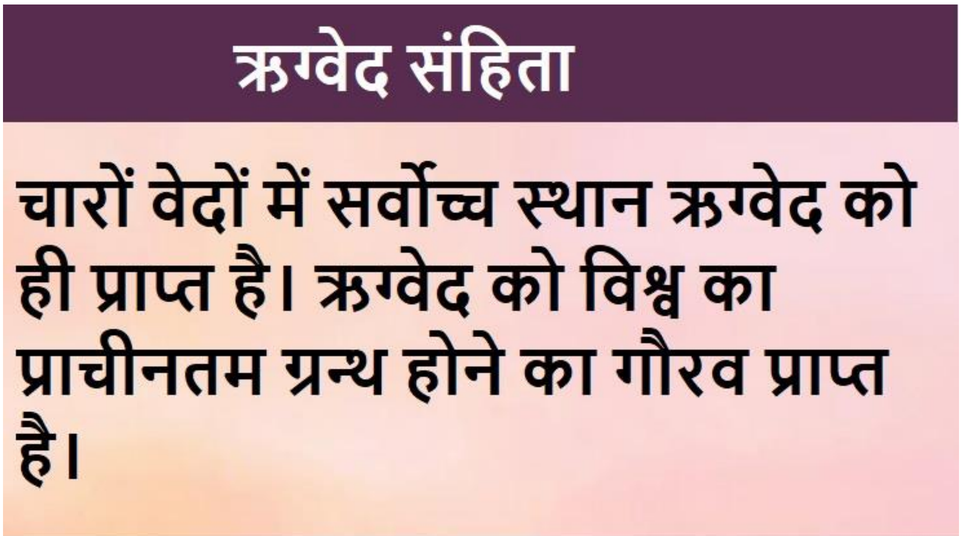

चार्वाक, बौद्ध और जैन दर्शन नास्तिक दर्शन के अंतर्गत आते हैं जबकि आस्तिक दर्शन के अंतर्गत सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदांत आते हैं। इन्हीं छह आस्तिक दर्शनों को षड्दर्शन या सनातन दर्शन भी कहा जाता है।

षड्दर्शन में सम्मिलित वेदांत दर्शन का मूल आरंभिक उपनिषदों में पाया जाता है। ईसा पूर्व दूसरी सदी में संकलित बादरायण का ब्रह्मसूत्र इस दर्शन का मूल ग्रंथ है। बाद में इस पर दो प्रख्यात भाष्य - शंकराचार्य द्वारा नवीं सदी में और रामानुजाचार्य द्वारा बारहवीं सदी में - लिखे गए। गौरतलब है कि शंकर के दर्शन को अद्वैतवाद कहा गया जबकि रामानुज के दर्शन को विशिष्टाद्वैतवाद। चूँकि प्रश्न सम्बंधित है अद्वैतवाद से इसलिए अब बात करते हैं शंकराचार्य के दर्शन अद्वैतवाद की।[9,10]

अद्वैतवाद' के अनुसार वास्तविक स्तर पर सिर्फ एक ही सत्ता ब्रह्म को स्वीकार किया गया। इनके अनुसार आत्मा और ब्रह्म अलग-अलग नहीं बल्कि एक ही हैं। साथ ही जगत में आत्माओं का वैविध्य प्रतीत अवश्य होता है किंतु यह वैविध्य वास्तविक नहीं है। विभिन्न आत्माएँ ब्रह्म के प्रतिबिम्ब या आभास मात्र हैं।[1]

इनके अनुसार सत्य के तीन स्तर हैं

• पारमार्थिक

• व्यावहारिक

• प्रातिभासिक

पारमार्थिक स्तर पर केवल एक ही सत्ता है- 'ब्रह्म'। व्यावहारिक स्तर पर तीन सत्ताएँ हैं - ईश्वर, जीव तथा जगत।

ईश्वर, ब्रह्म का ही सगुण रूप है। जीव ब्रह्म का प्रतिबिंब है, जो शरीर से युक्त होने के कारण अपने मूल स्वरूप को भूल गया है। जगत ब्रह्म का आभास मात्र है और इसकी रचना ईश्वर ने माया के माध्यम से की है।

इनके अनुसार जगत में जीव के शरीर से आत्मा के बंधन का कारण सिर्फ यह है कि शरीर से युक्त होने के कारण आत्मा अपने मूल ब्रह्म-स्वरूप को भूल गई है। बन्धन का कारण अज्ञान है और इस बन्धन से छुटकारा यानी मोक्ष की प्राप्ति सिर्फ ज्ञान मार्ग से ही सम्भव है।

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 2, Issue 11, November 2013

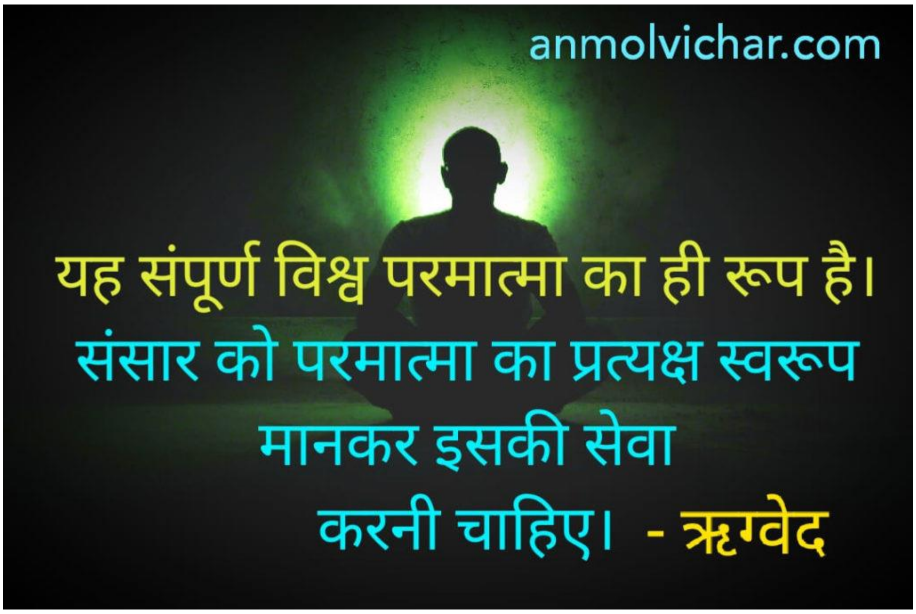

जैसे ही आत्मा को 'अहं ब्रह्मास्मि ' का ज्ञान प्राप्त होता है , वैसे ही उसे मोक्ष मिल जाता है और वह ब्रह्म हो जाती है। इसके बाद किसी प्रकार का द्वैत नहीं बचता।

अद्वैतवाद का 'अहं ब्रह्मास्मि' का भाव यहाँ 'अन- अल-हक़' कहलाता है, जिसका अर्थ बन्दे और खुदा की एकता ही है। वास्तविक सत्ता सिर्फ ब्रह्म की है। सगुण ईश्वर में सर्वशक्तिमत्ता, दयालुता, प्रेम तथा न्यायप्रियता जैसे गुण आरोपित किए जाते हैं।[2]

निर्गुण ईश्वर का अर्थ गुणहीन नहीं बल्कि गुणातीत से है मतलब वह गुणों से परे है। तात्पर्य यह है कि ईश्वर में गुणों का वैविध्य व गुणों की पूर्णता इतनी अधिक है कि उसे किसी विशिष्ट गुण से परिभाषित नहीं किया जा सकता। जैसे निर्गुण ईश्वर के लिए यह कहा जा सकता है कि ईश्वर परमाणु से भी छोटा हो सकता है और ब्रह्मांड से भी विशाल हो सकता है, ऐसे में किसी विशेष गुण से ईश्वर को परिभाषित नहीं किया जा सकता। ऐसे ईश्वर को निर्गुण, निराकार,निरंजन, अलख इत्यादि कहकर पुकारा जाता है।

इसके अलावा वेदांत की अन्य शाखाएँ भी हैं जिनमें मुख्यतः वैष्णव वेदांत और नव्य वेदांत आते हैं। वैष्णव वेदांत विचारधारा के पक्षकार रामानुज, बल्लभ, निम्बार्क,मध्वाचार्य , चैतन्य महाप्रभु आदि हैं और नव्य वेदांत विचारधारा के पक्षकार टैगोर, अरविंद घोष, गाँधी जी, स्वामी विवेकानंद आदि हैं।

परिणाम

इन सभी बिंन्दुओं पर विस्त्रित व्याख्या हमारे वेदों में भरी पडी़ है। सम्पूर्ण पिण्ड-ब्रह्माण्ड और परमात्मा को जानने का विज्ञान ही वेद है। वेद मानव सभ्यता, भारतीय संस्कृति के मूल श्रोत हैं। इनमें मानव-जीवन के लौकिक एवं पारलौकिक उन्नति के लिये उपयोगी सभी सिद्धान्तों एवं उपदेशों का अद्‌भुत वर्णन है। वेद एक प्रकार से मंत्र का विज्ञान है, जिसमें विराट् विश्व ब्रह्मांड की अलौकिक शूक्ष्म एवं चेतन सत्ताओं एवं शक्तियों तक से सम्बन्ध स्थापित करने करने के गूढ़ रहस्य दिये हुये है। भौतिक विज्ञानी अभी तक इस क्षेत्र में मामुली सी जानकारी ही प्राप्त कर सके हैं।[3]

IJIRSET

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 2, Issue 11, November 2013

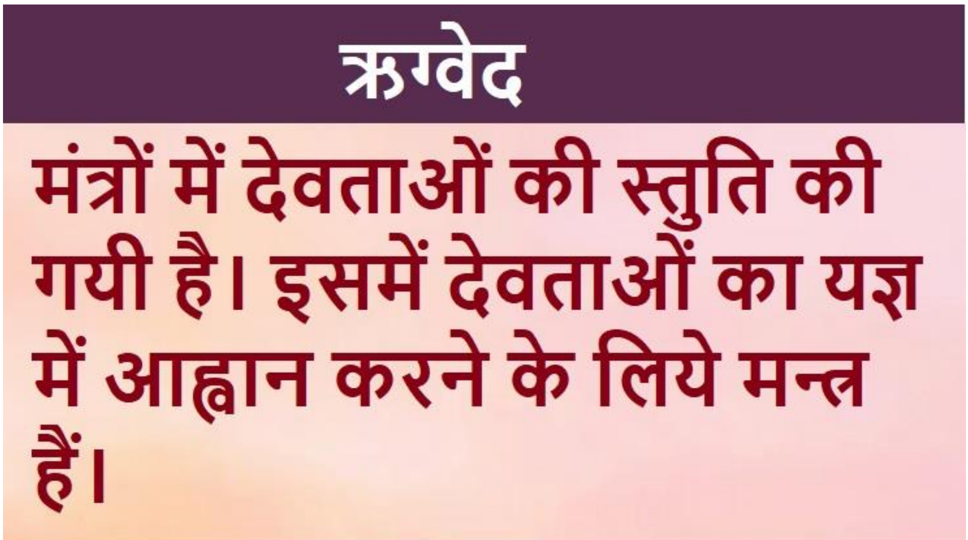

वेद का अर्थ है ज्ञान। वेद शब्द विद सत्तायाम,विदज्ञाने,विदविचारणे एवं विद्लाभे इन चार धातुओं से उत्पन्न होता है। संक्षिप्त में इसका अर्थ है, जो त्रिकालबाधित सत्तासम्पन्न हो, परोक्ष ज्ञान का निधान हो, सर्वाधिक विचारो का भंडार हो और लोक परलोक के लाभों से परिपूर्ण हो। जो ग्रंथ इष्ट की प्राप्ति और अनिष्ट के परिहार के उपायों का ज्ञान कराता है, वह वेद है। भारतीय मान्यता के अनुसार वेद ब्रह्मविद्या के ग्रंथभाग नही, स्वयं ब्रह्म हैं-शब्द ब्रह्म हैं। प्राचीन काल से हमारे ऋषि-महर्षि, आचार्य तथा भारतीय संस्कृति में आस्था रखने वाले विद्वानों ने वेद को सनातन, नित्य और अपौरूषेय माना हैं। उनकी यह मान्यता रही है कि वेद का प्रादुर्भाव ईश्वरीय ज्ञान के रूप में हुआ है। इसका कारण यह भी है कि वेदों का कोई भी निरपेक्ष या प्रथम उच्चरयिता नहीं है। सभी अध्यापक अपने पूर्व-पूर्व के अध्यापकों से ही वेद का अध्ययन या उच्चारण करते रहे हैं। वेद का ईश्वरीय ज्ञान के रूप में ऋषि-महर्षियों ने अपनी अन्तर्दृष्टि से प्रत्यक्ष दर्शन किया। द्रष्टाओं का यह भी मत है कि वेद श्रेष्ठतम ज्ञान-पराचेतना के गर्भ में सदैव से स्थित रहते हैं। परिष्कृत-चेतना-सम्पन्न ऋषियों के माध्यम से वे प्रत्येक कल्प में प्रकट होते हैं। कल्पान्त में पुनः वहीं समा जाते हैं।[4]

वेद को श्रुति, छन्दस् मन्त्र आदि अनेक नामों से भी पुकारा जाता है। विष्णु, भागवत, वायु, मत्स्य आदि पुराणों के अनुसार त्रेतायुग के अन्त तक वेद एक ही था। द्वापर के अन्त में महर्षि वेदव्यास ने वेद के चार विभाग किये:-

१-ऋग्वेद ।

२-यजुर्वेद ।

३-सामवेद ।

४-अथर्ववेद ।

जिसमें नियताक्षर वाले मंत्रों की ऋचाएँ हैं,वह ऋग्वेद कहलाता है। जिसमें स्वरों सहित गाने में आने वाले मंत्र हैं, वह सामवेद कहलाता है। जिसमें अनितह्याक्षर वाले मंत्र हैं, वह यजुर्वेद कहलाता है। जिसमें अस्त्र-शस्त्र, भवन निर्माण आदि लौकिक विद्याओं का वर्णन करने वाले मंत्र हैं, वह अथर्ववेद कहलाता है। वेद मंत्रों के समूह को शूक्त कहा जाता है, जिसमें एकदैवत्य तथा एकार्थ का ही प्रतिपादन रहता है।

वेद की समस्त शिक्षाएँ सर्वभौम है। वेद मानव मात्र को हिन्दू,सिख, मुसलमान, ईसाई बौद्ध,जैन आदि कुछ भी बनने के लिये नहीं कहतें। वेद की स्पष्ट आज्ञा है-मनुर्वभ। ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में सृष्टि के मूल तत्व, गूढ़ रहस्य का वर्णन किया गया है। सूक्त में आध्यात्मिक धरातल पर विश्व ब्रह्मांड की एकता की भावना स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त हुई है। भारतीय संस्कृति में यह धारणा निश्चित है कि विश्व-ब्रह्मांड में एक ही सत्ता विद्यमान है, जिसका नाम रूप कुछ भी नहीं है ।[5]

ऋक् संहिता में १० मंडल, बालखिल्य सहित १०२८ सूक्त हैं। वेद मंत्रों के समूह को सूक्त कहा जाता है, जिसमें एकदैवत्व तथा एकार्थ का ही प्रतिपादन रहता है। कात्यायन प्रभति ऋषियों की अनुक्रमणी के अनुसार ऋचाओं की संख्या १०५८०, शब्दों की संख्या १५३५२६ तथा शौनक कृत अनुक्रमणी के अनुसार ४,३२,००० अक्षर हैं। ऋग्वेद की जिन २१ शाखाओं का वर्णन मिलता है, उनमें से चरणव्युह ग्रंथ के अनुसार पाँच ही प्रमुख हैं- १. शाकल, २. वाष्कल, ३.आश्वलायन, ४. शांखायन और माण्डूकायन । ऋग्वेद में ऋचाओं का बाहुल्य होने के कारण इसे ज्ञान का वेद कहा जाता है। ऋग्वेद में ही मृत्युनिवारक त्र्यम्बक-मंत्र या मृत्युञ्जय मन्त्र (७/५९/१२) वर्णित है,ऋग्विधान के अनुसार इस मंत्र के जप के साथ विधिवत व्रत तथा हवन करने से दीर्घ आयु प्राप्त होती है

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 2, Issue 11, November 2013

तथा मृत्यु दूर हो कर सब प्रकार का सुख प्राप्त होता है। विश्वविख्यात गायत्री मन्त्र (ऋ० ३/६२/१०) भी इसी में वर्णित है। ऋग्वेद में अनेक प्रकार के लोकोपयोगी-सूक्त, तत्त्वज्ञान-सूक्त, संस्कार-सुक्त उदाहरणतः रोग निवारक-सूक्त (ऋ०१०/१३७/१-७) ,श्री सूक्त या लक्ष्मी सुक्त (ऋग्वेद के परिशिष्ट सूक्त के खिलसूक्त में) , तत्त्वज्ञान के नासदीय-सूक्त (ऋ० १०/१२९/१-७) तथा हिरण्यगर्भ-सूक्त (ऋ०१०/१२१/१-१०) और विवाह आदि के सूक्त (ऋ० १०/८५/१-४७) वर्णित हैं, जिनमें ज्ञान विज्ञान का चरमोत्कर्ष दिखलाई देता है।[6]

यजुर्वेदः-ऋग्वेद के लगभग ६६३ मंत्र यथावत् यजुर्वेद में हैं। यजुर्वेद वेद का एक ऐसा प्रभाग है, जो आज भी जन-जीवन में अपना स्थान किसी न किसी रूप में बनाये हुऐ है। संस्कारों एवं यज्ञीय कर्मकाण्डों के अधिकांश मन्त्र यजुर्वेद के ही हैं। यजुर्वेदाध्यायी परम्परा में दो सम्प्रदाय-१. ब्रह्म सम्प्रदाय अथवा कृष्ण यजुर्वेद, २. आदित्य सम्प्रदाय अथवा शुक्ल यजुर्वेद ही प्रमुख हैं। वर्तमान में कृष्ण यजुर्वेद की शाखा में ४ संहिताएँ -१. तैत्तिरीय, २. मैत्रायणी, ३.कठ और ४.कपिष्ठल कठ ही उपलब्ध हैं। शुक्ल यजुर्वेद की शाखाओं में दो प्रधान संहिताएँ- १. मध्यदिन संहिता और २. काण्व संहिता ही वर्तमान में उपलब्ध हैं। आजकल प्रायः उपलब्ध होने वाला यजुर्वेद मध्यदिन संहिता ही है। इसमें ४० अध्याय, १९७५ कण्डिकाएँ (एक कण्डिका कई भागों में यागादि अनुष्ठान कर्मों में प्रयुक्त होनें से कई मन्त्रों वाली होती है।) तथा ३९८८ मन्त्र हैं। विश्वविख्यात गायत्री मंत्र (३६.३) तथा महामृत्युञ्जय मन्त्र (३.६०) इसमें भी है।

सामवेदः- सामवेद संहिता में जो १८७५ मन्त्र हैं, उनमें से १५०४ मन्त्र ऋग्वेद के ही हैं। सामवेद संहिता के दो भाग हैं, आर्चिक और गान। पुराणों में जो विवरण मिलता है उससे सामवेद की एक सहस्त्र शाखाओं के होने की जानकारी मिलती है। वर्तमान में प्रपंच ह्रदय,दिव्यावदान, चरणव्युह तथा जैमिनि गृहसूत्र को देखने पर १३ शाखाओं का पता चलता है। इन तेरह में से तीन आचार्यों की शाखाएँ मिलती हैं- (१) कौमुथीय, (२) राणायनीय और (३) जैमिनीय। सामवेद का महत्व इसी से पता चलता है कि गीता में कहा गया है कि -वेदानां सामवेदोऽस्मि। (गीता-अ० १०, श्लोक २२)। महाभारत में गीता के अतिरिक्त अनुशासन पर्व में भी सामवेद की महत्ता को दर्शाया गया है-सामवेदश्च वेदानां यजुषां शतरुद्रीयम्। [[7] (म०भा०,अ० १४ श्लोक ३२३)। सामवेद में ऐसे मन्त्र मिलते हैं जिनसे यह प्रमाणित होता है कि वैदिक ऋषियों को एसे वैज्ञानिक सत्यों का ज्ञान था जिनकी जानकारी आधुनिक वैज्ञानिकों को सहस्त्राब्दियों बाद प्राप्त हो सकी है। उदाहरणतः- इन्द्र ने पृथ्वी को घुमाते हुए रखा है। (सामवेद,ऐन्द्र काण्ड,मंत्र १२१), चन्द्र के मंडल में सूर्य की किरणे विलीन हो कर उसे प्रकाशित करती हैं। (सामवेद, ऐन्द्र काण्ड, मंत्र १४७)। साम मन्त्र क्रमांक २७ का भाषार्थ है- यह अग्नि द्यूलोक से पृथ्वी तक संव्याप्त जीवों तक का पालन कर्ता है। यह जल को रूप एवं गति देने में समर्थ है। अग्नि पुराण के अनुसार सामवेद के विभिन्न मंत्रों के विधिवत जप आदि से रोग व्याधियों से मुक्त हुआ जा सकता है एवं बचा जा सकता है, तथा कामनाओं की सिद्धि हो सकती है। सामवेद ज्ञानयोग, कर्मयोग और भक्तियोग की त्रिवेणी है। ऋषियों ने विशिष्ट मंत्रों का संकलन करके गायन की पद्धति विकसित की। अधुनिक विद्वान् भी इस तथ्य को स्वीकार करने लगे हैं कि समस्त स्वर, ताल, लय, छंद, गति, मन्त्र,स्वर-चिकित्सा, राग नृत्य मुद्रा, भाव आदि सामवेद से ही निकले हैं।

अथर्ववेदः- अथर्ववेद संहिता के बारे में कहा गया है कि जिस राजा के रज्य में अथर्ववेद जानने वाला विद्वान् शान्तिस्थापन के कर्म में निरत रहता है, वह राष्ट्र उपद्रवरहित होकर निरन्तर उन्नति करता जाता हैः-

यस्य राज्ञो जनपदे अथर्वा शान्तिपारगः।[8]
निवसत्यपि तद्राराष्ट्रं वर्धतेनिरुपद्रवम् ।। (अथर्व०-१/३२/३)।

भूगोल, खगोल, वनस्पति विद्या, असंख्य जड़ी-बूटियाँ,आयुर्वेद, गंभीर से गंभीर रोगों का निदान और उनकी चिकित्सा,अर्थशास्त्र के मौलिक सिद्धान्त, राजनीति के गुह्य तत्त्व, राष्ट्रभूमि तथा राष्ट्रभाषा की महिमा, शल्यचिकित्सा, कृमियों से उत्पन्न होने वाले रोगों का विवेचन, मृत्यु को दूर करने के उपाय, प्रजनन-विज्ञान अदि सैकड़ों लोकोपकारक विषयों का निरूपण अथर्ववेद में है। आयुर्वेद की दृष्टि से अथर्ववेद का महत्व अत्यन्त सराहनीय है। अथर्ववेद में शान्ति-पुष्टि तथा अभिचारिक दोनों तरह के अनुष्ठन वर्णित हैं। अथर्ववेद को ब्रह्मवेद भी कहते हैं। चरणव्युह ग्रंथ के अनुसार अथर्व संहिता की नौ शाखाएँ- १.पैपल, २. दान्त, ३. प्रदान्त, ४. स्नात, ५.सौल, ६. ब्रह्मदाबल, ७. शौनक, ८. देवदर्शत और ९. चरणविद्य बतलाई गई हैं। वर्तमान में केवल दो- १.पिप्पलाद संहिता तथा २. शौनक संहिता ही उपलब्ध है। जिसमें से पिप्लाद संहिता ही उपलब्ध हो पाती है। वैदिकविद्वानों के अनुसार ७५९ सूक्त ही प्राप्त होते हैं। सामान्यतः अथर्ववेद में ६००० मन्त्र होने का मिलता है परन्तु किसी-किसी में ५९८७ या ५९७७ मन्त्र ही मिलते हैं।

वेदाङ्गः (वेदार्थ ज्ञान में सहायक शास्त्र)

वेद समस्त ज्ञानराशि के अक्षय भंडार है, तथा प्राचीन भारतीय संस्कृति,सभ्यता एवं धर्म के आधारभूत स्तम्भ हैं। वेद धर्म,अर्थ, काम और मोक्ष- इन चार पुरुषार्थों के प्रतिपादक हैं। वेद भी अपने अङ्गों के कारण ही ख्यातिप्राप्त हैं, अतः वेदाङ्गों का अत्याधिक महत्व है। यहां पर अङ्ग का अर्थ है उपकार करनेवाला अर्थात वास्तविक अर्थ का दिग्दर्शन करानेवाला। वेदाङ्ग छः प्रकार के हैः-

IJIRSET

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 2, Issue 11, November 2013

(१) शिक्षा, [9]
(२) कल्प,
(३) व्याकरण,
(४) निरुक्त,
(५) छन्द और
(६) ज्योतिष ।

(१) – शिक्षाः– स्वर एवं वर्ण आदि के उच्चारण–प्रकार की जहाँ शिक्षा दी जाती हो,उसे शिक्षा कहाजाता है। इसका मुख्य उद्येश्य वेदमन्त्रों के अविकल यथास्थिति विशुद्ध उच्चारण किये जाने का है। शिक्षा का उद्भव और विकास वैदिक मन्त्रों के शुद्ध उच्चारण और उनके द्वारा उनकी रक्षा के उदेश्य से हुआ है।

(२) –कल्पः– कल्प वेद–प्रतिपादित कर्मों का भलीभाँति विचार प्रस्तुत करने वाला शास्त्र है। इसमें यज्ञ सम्बन्धी नियम दिये गये हैं।

(३) –व्याकरणः–वेद–शास्त्रों का प्रयोजन जानने तथा शब्दों का यथार्थ ज्ञान हो सके अतः इसका अध्ययन आवश्यक होता है। इस सम्बन्ध में पाणिनीय व्याकरण ही वेदाङ्ग का प्रतिनिधित्व करता है। व्याकरण वेदों का मुख भी कहा जाता है।

(४) –निरुक्तः–इसे वेद पुरुष का कान कहा गया है। निःशेषरूप से जो कथित हो, वह निरुक्त है।इसे वेद की आत्मा भी कहा गया है।

(५) –छन्दः–इसे वेद पुरुष का पैर कहा गया है।ये छन्द वेदों के आवरण है। छन्द नियताक्षर वाले होते हैं। इसका उदेश्य वैदिक मन्त्रों के समुचित पाठ की सुरक्षा भी है।

(६) –ज्योतिषः–यह वेद पूरुष का नेत्र माना जाता है। वेद यज्ञकर्म में प्रवृत होते हैं और यज्ञ काल के आश्रित होते है तथा जयोतिष शास्त्र से काल का ज्ञान होता है। अनेक वेदिक पहेलियों का भी ज्ञान बिना ज्योतिष के नहीं हो सकता।[10]

निष्कर्ष

आज बात करते है शरीर के पंच तत्वों की जिनसे ये शरीर बना है। ये पंच तत्व ही भौतिक और अभौतिक रूप में शरीर का गि निर्माण करते है। कम ही लोगों को पता हो कि ये पंच तत्व क्या है और शरीर कैसे काम करते है। आज इन्ही तत्वों को समझेगे। ये पंच तत्व है क्रम अनुसार 1. पृथ्वी, 2. जल, 3. अग्नि, 4. वायु, 5. आकाश।

1. पृथ्वी तत्व- ये वो तत्व है जिससे हमारा भौतिक शरीर बनता है। जिन तत्त्वों, धातुओं और अधातुओं से पृथ्वी (धरती) बनी उन्ही से हमारे भौतिक शरीर की भी सरंचना हुई है। यही कारण है कि हमारे शरीर लौह धातु खून में, कैल्शियम हड्डियों में, कार्बन फाइबर रूप में, नाइट्रोजन प्रोटीनरि रूप में और भी कितने ही तत्व है जो शरीर में पाए जाते है। और यही कारण है कि आयुर्वेद में शरीर की निरोग और बलशाली बनाने के लिए धातु की भस्मो का प्रयोग किया जाता है।[11]

2. जल तत्व- जल तत्व से मतलब है तरलता से। जितने भी तरल तत्व जो शरीर में बह रहे है वो सब जल तत्व ही है। चाहे वो पानी हो, खून हो, वसा हो, शरीर मे बनने वाले सभी तरह के रा रस और एंजाइम। वो सभी जल तत्व ही है। जो शरीर की ऊर्जा और पोषण तत्वों को पूरे शरीर मे पहुचाते है। इसे आयुर्वेद में कफ के नाम से जाना जाता हैं। इस जल तत्व की मात्रा में संतुलन बिगड़ते ही शरीर भी बिगड़ कर बीमार बना देगा।[10]

3.अग्नि तत्व- अग्नि तत्व ऊर्जा, ऊष्मा, शक्ति और ताप का प्रतीक है। हमारे शरीर में जितनी भी गर्माहट है वो सब अग्नि तत्व ही है। यही अग्नि तत्व भोजन को पचाकर शरीर को निरोग रखता है। ये तत्व ही शरीर को बल और शक्ति वरदान करता है। इसे आयुर्वेद में पित्त के नाम से ज जाना जाता है। इस तत्व की ऊष्मा का भी एक स्तर होता है, उससे ऊपर या नीचे जाने से शरीर भी बीमार हो जाता है।

4. वायु तत्व- जितना भी प्राण है वो सब वायु तत्व है। जो हम सांस के रूप में हवा (ऑक्सीजन) लेते है, जिससे हमारा होना निश्चित है, जिससे हमारा जीवन है। वही वायु तत्व है। पतंजलि योग में जितने भी प्राण व उपप्राण बताये गए है वो सब वायु तत्व के कारण ही काम कर रहे है। इसको आयुर्वेद में वात के नाम से जानते है। इसका भी सन्तुलन बिगड़ने से शरीर का संतुलन बिगड़ कर शरीर बीमार पड़ जाता है।[11]

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 2, Issue 11, November 2013

5. आकाश तत्व- ये तत्व ऐसा जिसके बारे में कुछ साधक ही बता सकते है कि ये तत्व शरीर मे कैसे विद्यमान है और क्या काम करता है। ये आकाश तत्व अभौतिक रूप में मन है। जैसे आकाश अनन्त है वैसे ही मन की भी कोई सीमा नही है। जैसे आकाश आश्चर्यों से भरा पड़ा है वैसे ही मन के आश्चर्यों की कोई सीमा नही है। जैसे आकाश अनन्त ऊर्जाओं से भरा है वैसे ही मन की शक्ति की कोई सीमा नही है जो दबी या सोई हुई है। जैसे आकाश में कभी बादल, कभी धूल और कभी बिल्कुल साफ होता है वैसे ही मन में भी कभी ख़ुशी, कभी दुख और कभी तो बिल्कुल शांत रहता है। ये मन आकाश तत्व रूप है जो शरीर मे विद्यमान है।

इन पंच तत्व से ऊपर एक तत्व है जो आत्मा (ॐ) है। जिसके होने से ही ये तत्व अपना काम करते है,बाकी सारे शारीरीक अँग स्थूल शरीर मे आते है जो इन पँचतत्व और आत्मा के सँयोग से क्रियमाण हैं,बिना इनके ये शरीर मृत हो जाता है।[12]

संदर्भ

1) हिंदी में पढ़े सभी अध्याय ऋग्वेद के
2) ऋग्वेद (संस्कृत) (विकिस्रोत)
3) ऋग्वेद, हिन्दी अर्थ सहित
4) वेद-पुराण - यहाँ चारों वेद एवं दस से अधिक पुराण हिन्दी अर्थ सहित उपलब्ध हैं। पुराणों को यहाँ सुना भी जा सकता है।
5) महर्षि प्रबंधन विश्वविद्यालय - यहाँ सम्पूर्ण वैदिक साहित्य संस्कृत में उपलब्ध है।
6) ज्ञानामृतम् - वेद, अरण्यक, उपनिषद् आदि पर सम्यक जानकारी
7) वेद एवं वेदांग - आर्य समाज, जामनगर के जालघर पर सभी वेद एवं उनके भाष्य दिये हुए हैं।
8) जिनका उदेश्य है - वेद प्रचार[मृत कड़ियाँ]
9) वेद-विद्या_डॉट_कॉम
10) ऋग्वेद और सामवेद डाउनलोड करें (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय)
11) Why Read Rig Veda
12) ऋग्वेद काल